REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2025

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास'गोदान' की प्रासंगिकता

प्रा. प्रमोध घन
विभाग प्रमुख, हिंदी तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सेनगांव, जिल्हा हिंगोली.

सार:

यह रिपोर्ट मुंशी प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास 'गोदान' की गहन प्रासंगिकता का विश्लेषण करती है। वर्ष 1936 में प्रकाशित यह कृति भारतीय ग्रामीण जीवन और कृषि-संस्कृति का एक महाकाव्य है। रिपोर्ट दर्शाती है कि जहाँ एक ओर यह उपन्यास ब्रिटिशकालीन सामंती और महाजनी व्यवस्था द्वारा भारतीय किसान के शोषण का यथार्थवादी चित्रण करता है, वहीं दूसरी ओर इसके केंद्रीय विषय — जैसे कृषि संकट, ऋणग्रस्तता, सामाजिक असमानता और नारी संघर्ष — आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। गोदान केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक ऐसा दर्पण है जो वर्तमान भारतीय समाज की समस्याओं को प्रतिबिंबित करता है और हमें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है।

मुख्य शब्द: कृषक जीवन, सामंतवाद, महाजनी सभ्यता, गोदान, ऋण, वर्ग संघर्ष, ग्रामीण-शहरी विभाजन, यथार्थवाद, नारी विमर्श।

परिचय: 'गोदान' की वैचारिक और साहित्यिक भूमि

प्रेमचंद, जिन्हें उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है, ने अपने उपन्यासों को मानव चरित्र का गहन चित्रण माना है। उनकी रचनात्मक यात्रा आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर एक महत्वपूर्ण संक्रमण का प्रतीक है जिसका चरमोत्कर्ष उनके अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास 'गोदान' में दिखाई देता है। यह कृति १९३६ में प्रकाशित हुई और इसे भारतीय ग्रामीण जीवन एवं कृषि संस्कृति का महाकाव्य कहा गया है। यह उपन्यास केवल होरी महतो नामक एक किसान की कहानी नहीं है, बल्कि उस काल के हर भारतीय किसान की आत्मकथा है। इसकी कथा-संरचना दो समानांतर धाराओं में प्रवाहित होती है: एक ओर ग्रामीण जीवन का चित्रण है,जिसका केंद्र बिंदु होरी है, और दूसरी ओर शहरी जीवन की कथा है जिसमें पूंजीवादी वर्ग के पात्र शामिल हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों कथाओं को इतनी कुशलता से जोड़ा है कि वे एक-दूसरे से गुंथी हुई प्रतीत होती हैं जिससे उपन्यास का प्रवाह आदि से अंत तक बना रहता है।

गोदान के केंद्रीय विषय और उनकी वर्तमान प्रासंगिकता

होरी की त्रासदी और 'गोदान' का अंतिम कर्मकांड

उपन्यास का मुख्य कथानक होरी महतो नामक एक साधारण और मेहनती किसान के इर्द-गिर्द घूमता है, जिसका जीवन का एकमात्र सपना एक गाय खरीदना है। ग्रामीण समाज में गाय को संपन्नता और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। इस सपने कोपूरा करने की उसकी कोशिश ही उसकी त्रासदी की शुरुआत बन जाती है। वह अपने भाई हीरा से उधार लेकर गाय खरीदता है, लेकिन हीरा की ईर्ष्या के

कारण गाय को विष दे दिया जाता है। इस घटना से होरी पर कर्ज और सामाजिक अपमान का बोझ बढ़ जाता है, जो उसे गरीबी और दुख के अंतहीन चक्र में धकेल देता है।

होरी की यह व्यक्तिगत त्रासदी एक ऐसी शोषणकारी व्यवस्था की भयावहता को दर्शाती है, जहाँ जमींदार, महाजन, पुलिस, पटवारी और पुरोहित सभी मिलकर किसानों का संगठित शोषण करते हैं। यह एक ऐसा तंत्र है जो फसल हो या न हो, लगान और चंदा वसूलता है, और जरूरत के समय दिए गए कर्ज से किसानों की पूरी जिंदगी निचोड़ लेता है। होरी इस पूरी प्रक्रिया में लगातार शोषित होता रहता है, और प्रेमचंद ने उसके दुख भरे जीवन को भारतीय किसान का शोकगीत बताया है।

उपन्यास का शीर्षक और उसका प्रतीकात्मक अंत एक गहरी विडंबना को दर्शाता है। हिंदू धर्म में 'गोदान' का अर्थ गाय का दान करना होता है, जिसे मृत्यु के समय एक पवित्र कर्मकांड माना जाता है जो व्यक्ति को मोक्ष और वैतरणी पार करने में सहायता देता है। होरी, जो जीवनभर एक गाय के लिए लालायित रहा, उसे कभी प्राप्त नहीं कर सका। उसकी मृत्यु के समय, जब उसके पास गोदान करने के लिए कुछ नहीं बचता, तो उसकी पत्नी धनिया अपनी कताई की कमाई में से २० आने निकालकर उसके ठंडे हाथों पर रखती है, और कहती है, "यही तुम्हारा गोदान है"। यह धार्मिक मान्यताओं की हार और कठोर यथार्थ की जीत का प्रतीक है[21]।

कृषि संकट और ऋणग्रस्तता

'गोदान' का मूल कथ्य भारतीय किसान की ऋणग्रस्तता और कृषि संकट है। आलोचक रामविलास शर्मा ने 'गोदान' की मूल समस्या को 'ऋण' या 'कर्ज' बताया है। उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि किस प्रकार जमींदारी और महाजनी सभ्यता के दोहरे शोषण ने होरी जैसे किसानों को एक ऐसे अंतहीन ऋण चक्र में फंसा दिया है, जिससे वे आजीवन मुक्त नहीं हो पाते।

आज के वर्तमान संदर्भ में भी यह समस्या उतनी ही विकराल है। भले ही जमींदारी प्रथा समाप्त हो गई हो, लेकिन किसानों का शोषण करने वाले 'चेहरे' बदल गए हैं। सामंती जमींदारों और साहूकारों की जगह अब पूंजीवादी व्यवस्था, कॉर्पोरेट जगत और जटिल बैंकिंग प्रणाली ने ले ली है। आज भी किसान सूखे, बाढ़, फसल का उचित मूल्य न मिलने और अत्यधिक कर्ज के बोझ से जूझ रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार, २०१७ और २०२१ के बीच कृषि क्षेत्र में लगभग ५३,००० लोगों ने आत्महत्या की, जिसमें से २८६०० से अधिक किसान थे [28]।

तालिका १: भारत में कृषि क्षेत्र में आत्महत्याएँ (२०१७-२०२१)

वर्ष	आत्महत्या के मामले
२०१७	१०६५५
२०१८	१०३४९
२०१९	१०२८१
२०२०	१०६७७
२०२१	१०८८१
कुल	५२८४३

स्रोत: एनसीआरबी रिपोर्ट, २०२१

यह तालिका स्पष्ट करती है कि शोषण का तंत्र वही है, चाहे उसके रूप कितने भी बदल गए हों। प्रेमचंद ने दिखाया कि कैसे किसान की 'मरजाद' उसे कर्ज के दलदल में धकेल देती है, और आज भी, किसान सामाजिक दबाव और आर्थिक मजबूरियों के कारण अपनी जान दे रहे हैं

सामाजिक असमानता: जाति, धर्म और वर्ग का टकराव

प्रेमचंद ने 'गोदान' में जातिगत भेदभाव (दलित लड़की सिलिया के चरित्र के माध्यम से) और धार्मिक पाखंड (पंडित दातादीन के चरित्र के माध्यम से) का बेबाक चित्रण किया है। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे शोषक वर्ग किसानों की धर्मभीरुता का अनुचित लाभ उठाते हैं। यह एक ऐसा तंत्र है जो किसान को न केवल आर्थिक रूप से निचोड़ता है, बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी कमजोर

करता है [3]। यह स्थिति आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जहाँ हाशिए पर पड़े समुदाय अपनी पहचान और अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं और जातिगत हिंसा एवं सामाजिक भेदभाव अभी भी हमारे समाज का हिस्सा हैं।

नारी जीवन: संघर्ष, स्वाभिमान और बदलती भूमिकाएँ

प्रेमचंद ने 'गोदान' में महिला पात्रों को केवल पुरुषों के सहायक के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र और दृढ़ चरित्र वाली स्त्रियों के रूप में चित्रित किया है। उपन्यास में धनिया और मालती के चरित्रों का एक तुलनात्मक अध्ययन भारतीय नारी जीवन की दो अलग-अलग छवियों को प्रस्तुत करता है।

धनिया, जो होरी की पत्नी है, एक साधारण ग्रामीण महिला होते हुए भी त्याग, निडरता और विद्रोह का प्रतीक है। वह अपने पति की चापलूसी से घृणा करती है और अन्याय के विरुद्ध खुलकर लड़ती है। दूसरी ओर, मालती एक उच्च शिक्षित, स्वतंत्र विचारों वाली और आत्मनिर्भर आधुनिक नारी है, जो उस समय के शहरी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। मालती का चरित्र उस समय की आधुनिक नारी का प्रतीक है, लेकिन प्रेमचंद ने उनके चरित्र को अंत में सेवा और मातृत्व की देवी में परिवर्तित कर दिखाया है कि प्रेमचंद नारी मुक्ति के समर्थक होते हुए भी, उनके चरित्रों को पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं में अधिक महत्व देते थे। इस प्रकार धनिया और मालती दोनों ही अपने-अपने तरीके से पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जूझ रही हैं और उनके चरित्र आज भी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को दर्शाते हैं।

गोदान का साहित्यिक और आलोचनात्मक महत्व

भाषा, शिल्प और शैली: यथार्थवाद की पराकाष्ठा

'गोदान' की भाषा-शैली सरल, सीधी, और प्रवाहपूर्ण है। प्रेमचंद ने मुहावरों और ग्रामीण बोलचाल के शब्दों का प्रभावी उपयोग किया है, जिससे यह उपन्यास न केवल पाठकों से जुड़ता है, बल्कि अपने परिवेश का एक प्रामाणिक चित्र भी प्रस्तुत करता है। उपन्यास में संवादों की योजना मनोवैज्ञानिक ढंग से की गई है, जो पात्रों की आयु, परिवेश और स्थिति के अनुकूल हैं।

आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर

'गोदान' प्रेमचंद की पिछली कृतियों से अलग है क्योंकि यह गांधीवाद (आदर्शवाद) से मोहभंग और मार्क्सवाद (यथार्थवाद) की ओर एक महत्वपूर्ण वैचारिक बदलाव को दर्शाता है। कुछ आलोचकों ने उपन्यास के कथानक में 'बिखराव' की बात कही है, लेकिन यह तर्क दिया जा सकता है कि यह 'बिखराव' वास्तव में ग्रामीण और शहरी शोषण के बीच के जटिल संबंधों को दर्शाने के लिए जानबूझकर किया गया एक प्रयास है।

निष्कर्ष

'गोदान' केवल होरी महतो नामक एक किसान की कहानी नहीं है, बल्कि उस समूचे समाज की त्रासदी है, जहाँ नैतिकता और परंपरा जैसे आदर्श व्यक्ति के अस्तित्व पर भारी पड़ते हैं[3]। यह उपन्यास हमें समाज की गहराइयों में झांकने, कठोर सच्चाइयों को समझने और सामाजिक सुधार की दिशा में सोचने को प्रेरित करता है। 'गोदान' की प्रासंगिकता समय की कसौटी पर इसलिए खरी उतरती है क्योंकि आज भी किसानों का शोषण, सामाजिक असमानता और नारी जीवन की चुनौतियाँ उतनी ही यथार्थ हैं जितनी प्रेमचंद के समय में थीं। जब तक ये घाव भर नहीं जाते, यह उपन्यास हमारे लिए एक चेतावनी और एक प्रेरणा दोनों बना रहेगा, जो हमें अपनी समस्याओं का सामना करने और बेहतर भविष्य के लिए संघर्ष करने का आह्वान करता है।

संदर्भ:

१. प्रेमचंद, मुंशी – गोदान, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
२. विश्वनाथ त्रिपाठी, साक्षात्कार और समीक्षा, वाणी प्रकाशन।
३. भारत में कृषक आत्महत्याओं पर सरकारी रिपोर्ट – राष्ट्रीय अपराध रिकोर्ड ब्यूरो, भारत सरकार, नवीनतम संस्करण।